❋ 21 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] गुरु को तो कोई पतित-पावन कह नहीं सकते। गुरू कहते हैं फिर भी एक में पूरा निश्चय नहीं बैठता है। इसलिए जांच करते हैं, ऐसा कोई गुरू मिले जो हमको अपने घर अथवा वानप्रस्थ अवस्था में पहुँचाये, उसके लिए बहुत युक्तियां रचते हैं, जहाँ सुना फलाने की बहुत महिमा है, वहाँ जायेंगे। जो इस झाड़ का सैपलिंग है, उनको तुम्हारे ज्ञान का तीर लग जाता है। समझते हैं यह तो क्लीयर बात है। बरोबर तुम वानप्रस्थ अवस्था में जाते हो ना। कोई बड़ी बात नहीं है।

2] जैसे लौकिक बाप का बनने में खर्चा नहीं आता, वैसे पारलौकिक बाप का बनने में कोई खर्चा नहीं लगता। यह तो बाप बैठ पढ़ाते है, पढ़ाकर तुमको देवता बनाते हैं। तुम कोई छोटे बच्चे तो नहीं हो, बड़े हो। बाप का बनने से बाप राय देते हैं, तुमको अपनी राजधानी स्थापन करनी है। इसमें पवित्र जरूर बनना है। खर्चा तो कुछ भी नहीं लगता।

3] यह अविनाशी ज्ञान रत्न एक-एक लाखों रूपयों का है। कितने तुमको रत्न मिलते हैं। यह ज्ञान रत्न ही सच्चे बन जाते हैं। तुम जानते हो बाप यह रत्न देते हैं झोली भरने के लिए। यह मुफ्त में मिलते हैं। खर्चा कुछ भी नहीं।

❋ योग-

1] आत्मा इतना छोटा सितारा है। बाप भी सितारा है। वह सम्पूर्ण पवित्र आत्मा और यह सम्पूर्ण अपवित्र। सम्पूर्ण पवित्र का संग तारे..... सो तो एक का ही संग मिल सकता है। संग चाहिए जरूर।

2] बाप कहते हैं मुझे याद करो। याद से ही पाप मिट जायेंगे और तुम देवता बन जायेंगे।

❋ धारणा-

1] पहली मुख्य बात है पावन बनने के लिए बाप को याद करना।

2] बाप खुद कहते हैं मेरा वर्सा तुमको चाहिए तो पतित से पावन बनो, तब पावन विश्व के मालिक बन सकेंगे।

3] 'बाबा' अक्षर बहुत मीठा है। बाबा और वर्सा। इतना निश्चय में बच्चों को रहना है। यह है ही मनुष्य है ही मनुष्य से देवता बनने का विद्यालय। देवतायें होते ही हैं पावन। अब बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो, मनमनाभव।

❋ सेवा-

1] पहले-पहले यह एक बात ही समझानी है। 5 हजार वर्ष पहले भी बाप ने कहा है मामेकम् याद करो। शिवबाबा आया था तब तो शिव जयन्ती मनाते हैं ना। भारत को स्वर्ग बनाने के लिए यहीं समझाया था कि मामेकम् याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। छोटी-छोटी बच्चियां भी ऐसे बैठ समझायें।